वैदिक वाङ्मय में राजनीतिक गठबन्धन के बीज

—डॉ० रामहेत गौतम
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग,
डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म.प्र.

राष्ट्र की सुरक्षा व समृद्धि के लिए एक राजा का होना आवश्यक है। क्योंकि राजा के अभाव में राष्ट्र में अराजकता फैल जाती है। जैसे कि ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार देवताओं और असुरों के मध्य सत्ता को लेकर निरन्तर युद्ध चलता रहता था जिसमें असुर वार-वार देवों को हरा देते थे क्योंकि उनके पास कुशल नेतृत्व करने वाले का अभाव था। अत: देवताओं ने अपना एक राजा चुना जो इन्द्र कहलाया। ऋग्वेद और अथर्ववेद में कई जगह राजा के निर्वाचन का उल्लेख प्राप्त होता है। **'त्वां विषो वृणतां राज्याय, त्वामिमाः प्रदिशः पञ्चदेवीः'**[1] अर्थात् पाँचों दिशाओं से आयी हुई ये प्रजायें तुम्हें राज्य के लिए निर्वाचित करती हैं। राजा का निर्वाचन समितियों के द्वारा गुणों और सर्वोत्कृष्टता के आधार पर किया जाता था। ध्रुवाय ते समितिः कल्पतामिह।[2] विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरं, सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे।[3]

प्रजा का कर्तव्य है कि वह राजा को पूर्ण समर्थन दे और राजा का कर्त्तव्य है कि वह प्रजा की सुरक्षा करें। प्रजास्त्वाऽनुप्राणन्तु, प्रजास्त्वम् अनुप्राणिहि।[4]

---

1. अथर्ववेद 3/4/2
2. अथर्ववेद 6/88/3
3. अथर्ववेद 20/54/1
4. यजुर्वेद 4/25

Scanned by CamScanner

प्राचीन काल में प्रजा के समर्थन से राजा का चयन होता था, आज भी होता है, फर्क सिर्फ इतना है कि आज विचार के आधार पर दलों का गठन हो गया है। विचारधारा के आधार पर ही जनप्रतिनिधियों का निर्वाचन होता है। एक पार्टी जनप्रतिनिधियों की निर्धारित संख्या पूर्ण न होने पर सरकार नहीं बना पाती, जिसके लिए अन्य दल के प्रतिनिधियों का समर्थन लेने के लिए दो दलों के मध्य मुद्दों के आधार पर समझौता (गठबन्धन) होता है। गठबन्धन का मूल जनहित हो तभी देश हित में रहता है। इसकी वकालात हमारे शास्त्र भी करते हैं।

इयं ते राड्, यन्ताऽसि यमनो ध्रुवोऽसि धरुणः।
कृष्यै त्वा, क्षेमाय त्वा, रय्यै त्वा, पोषाय त्वा।।[5]

राज्याभिषेक के समय राजा को कर्तव्य बोध कराते हुए कहा गया है कि—तुमको यह राष्ट्र दिया जा रहा है, तुम इसके नियन्ता हो,तुम दृढ़ता पूर्वक इस उत्तरदायित्व को सम्भालो। यह राष्ट्र तुम्हें कृषिसमृद्धि, जनकल्याण, आर्थिक समृद्धि और राष्ट्रीय सशक्तता के कार्यों को संचालित करने के लिए दिया जा रहा है।

वैदिक वाङ्मय में राष्ट्र नायक को पाञ्चजन्य कहा गया है, जिसका भाव होता है—समाज के समस्त प्रकार के जनों का हित करने वाला।[6] राष्ट्र नायक से यह भी कामना की गयी है कि—वह विना किसी संकोच के समाज के पाँचों प्रकार के घरों में जाया करे। जिससे सभी संगठित होकर राष्ट्रीय कार्यों की सम्पन्नता में भरपूर सहयोग देते रहेंगे। वाणी, बुद्धि और ज्ञान के सामञ्जस्य के उपदेश द्वारा राष्ट्र हित में पारस्परिक एकता को ही सुरक्षित रखना चाहा है। क्योंकि एकता में ही सुख की अनुभूति होती है। यो एकतायाः सुखम्[7] संगठन कुलीनता, तेजस्विता, और शक्ति सम्पन्नता का प्रतीक माने जाने के साथ-साथ प्रसन्नता और सुरक्षा का सुदृढ़ साधन माना जाता रहा है।[8] राष्ट्र हित परक कार्यों की सिद्धि के लिए गठबन्धन परम आवश्यक माना गया है। जिसके लिए निर्विवाद एकता बनाए रखने का उपदेश दिया गया है।[9] सभी वर्गों के एकभाव से अनुकूल कार्य करने पर ही सार्वजनिक कार्य की सिद्धि सम्भव वतायी गयी है। प्रतीत होने वाले भेदभाव को पनपने से पहले ही मिटा देना चाहिये। सर्वजन हिताय, सर्वजन

---

5. यजुर्वेद 9/22
6. ऋग्वेद 1/100/12
7. ऋग्वेद 5/53/14
8. ऋग्वेद 7/9/5
9. ऋग्वेद 7/76/5

Scanned by CamScanner

सुखाय, वृहद् कल्याणपरक राष्ट्रीय योजना को सफल बनाने हेतु देवताओं का आह्वान् करते हुए दिग्पालों(नेताओं) से मतभेद भुलाने की अपील की गयी है कि—

आयातु मित्र गतुभिः कल्पमानः संवेशयन् पृथिवीमुस्त्रियाभिः।
अथास्मभ्यं वरुणो वायुरग्निर्बृहद्राष्ट्रं संवष्यं दधातु।।[10]
सं वो मनांसि सं व्रता समाकूतीर्नमामसि।
अमी ये विव्रता स्थन तान्वः सं नमयामसि।।[11]

राष्ट्र के विकास और सुरक्षा के लिए गठबन्धन राष्ट्रीय भावना का प्रतीक है।

आज राष्ट्रीय विकास हेतु शिक्षा सम्पर्क, विचार-विमर्श, उद्देश्य, अधिकार और दायित्व को ध्यान में रखते हुए राष्ट्र के सभी वर्गों व क्षेत्रों के सम्यक् विकास की बात कही जाती है। सभी के समान रूप से सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक विकास पर जोर दिया जाना अपेक्षित है। देश हित में गठबन्धन को अपेक्षित मानते हुए हमारे वैदिक ऋषियों ने भी उपदेश दिया है कि—

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।[12]
समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।[13]
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।[14]

अर्थात् आपस में मिलकर चलें, मिलकर बोले, मिल-जुलकर ही ज्ञान प्राप्त करें, पस्पर सम्पर्क से रहें, सौमनस्य बनाएँ, यथायोग्य दायित्व भाग लें, मिलकर मन्त्रणा करें, समितियों में समान अधिकार मानें, उद्देश्य में हार्दिक समानता रखें, सब साथ-साथ काम करें।

विषम परिस्थितियों में समस्त भेदों को भुलाकर राष्ट्र हित में गठबंधित होने की कामना करते हुए ऋषि कहते हैं—

---

10. अथर्ववेद 3/8/1
11. अथर्ववेद 3/8/5
12. ऋग्वेद 10/191/2
13. ऋग्वेद 10/191/3
14. ऋग्वेद 10/191/4

Scanned by CamScanner

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचससं नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्त्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती।।[15]

अर्थात् अपनी सुविधानुसार भाषा बोले, अपनी इच्छानुसार धर्म आचरण करें परन्तु अपने राष्ट्र को परिवार मानते हुए मिल-जुलकर राष्ट्र का ध्यान रखें। तभी देश का सर्वांगीण विकास होगा। देश के यश में वृद्धि होगी। सभी नागरिक खुशहाल रहेंगे।

राष्ट्र हित भावना से किया गया गठबन्धन राष्ट्र हितैषी साबित होता है। किसी भी दल को निरंकुश स्वेच्छाचारी होने से रोकता है। संकीर्ण विचारधारा और दलगत स्वार्थ प्रशासनिक निर्णयों पर हावी नहीं हो पाता। दलों को अपनी देशहितकारी विचारधारा को पल्लवित करने का मौका भी मिलता है। इसप्रकार गठबन्धन के अच्छे पहलू होने के साथ-साथ कुछ दोष भी होते हैं जैसे पार्टी के व्यक्तिगत स्वार्थ के चलते देश हित के निर्णय भी बाधित होते हैं। वैदिक वाङ्मय स्वच्छ तथा पवित्र मानसिकता के साथ राष्ट्र हित के लिए गठबन्धित होने की प्रेरणा देता है।

पथ्या रेवतीर्बहुधा विरूपाः सर्वाः सङ्गत्य वरीयस्ते अक्रन्।
तास्त्वा सर्वाः संविदाना ह्वयन्तु दशमीमुग्रः सुमना वषेह।।[16]

अर्थात् हे तेजस्विन! विभूति सम्पन्न, मार्ग (लक्ष्य की ओर)पर चलने वाली, विविध रूप वाली प्रजाओं ने संयुक्त रूप से आपको यह परणीय पद सृजित किया है। वे सब आपको एक होकर पुकारें। आप उग्रवीर एवं श्रेष्ठमन वाले होकर दशमी (चरमावस्था) को अपने अधीन करें।

●●●

15. अथर्ववेद 12/1/45
16. अथर्ववेद-3/4/7

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

1. संस्कृत साहित्य में सामाजिक न्याय/प्रो० कमलेशकुमार छ. चोकसी : 23
2. नेपाल का संस्कृत साहित्य/प्रो० रमाकान्त पाण्डेय : 32
3. बीसवीं शती का राजस्थानीय श्रीरामस्तोत्र साहित्य/प्रो० नीरज शर्मा : 45
4. प्रतीक नाटक प्रबोधचन्द्रोदय में नाट्यशास्त्रीय तत्त्वों की समीक्षा/ डॉ० शान्तिलाल सालवी : 55
5. संस्कृत साहित्यशास्त्र में गुण विमर्श/डॉ० बाबूलाल मीना : 63
6. सांख्ययोग दर्शन में बन्धन एवं मोक्ष व्यवस्था/डॉ० शशिकान्त द्विवेदी : 70
7. पं० ताराचरण भट्टाचार्य की साहित्य साधना/डॉ० राजेश सरकार : 82
8. वैदिक वाङ्मय में राजनीतिक गठबन्धन के बीज/डॉ० रामहेत गौतम : 93
9. महाकवि भवभूति के 'उत्तररामचरितम्' में दाम्पत्य-जीवन की वर्तमान उपादेयता/डॉ०गटुलाल पाटीदार : 97
10. श्रीहर्ष कृत 'नैषधीयचरितम्' महाकाव्य में रस, छन्द एवं अलंकार योजना/डॉ० सुनीता आर्य : 109
11. आधुनिक संस्कृत साहित्यशास्त्र में काव्यहेतु विमर्श/ डॉ० आशा सिंह रावत : 117
12. महर्षि वाल्मीकि रामायण में अर्थ चिन्तन/डॉ० रिपन कुमार शर्मा : 127
13. आरोग्य का मूल सदाचार/डॉ० मोनिका वर्मा : 132
14. ऋक् परिशिष्ट मन्त्रों में छन्दोविमर्श/डॉ० शिल्पा सिंह : 144
15. महाकवि भास प्रणीत 'स्वप्नवासवदत्तम्' व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य में/ डॉ० कुसुमलता टेलर : 152

Scanned by CamScanner

संस्कृत वाङ्मयामृत

सम्पादक
डॉ० जी.एल. पाटीदार
सहायक आचार्य
संस्कृत विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज०)

सौरभ पब्लिकेशन
SAURABH PUBLICATION

Scanned by CamScanner

प्रतिलिप्याधिकार प्रकाशक व लेखक के अधीन सुरक्षित है। इनकी पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग का पुनः प्रकाशन वर्जित है। इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं लेखक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। इनसे किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए संपादक और प्रकाशक उत्तरदायी नहीं हैं। किसी भी विवादास्पद स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उदयपुर होगा।

ISBN : 978-81-909947-5-0
मूल्य : छह सौ रुपये
संस्करण : 2021
© लेखक
Sanskrit Vangmayamritam
Edit By Dr. G. L. Patidar ₹ 600.00

सौरभ पब्लिकेशन, 4, शर्मा कॉलोनी उदयपुर (राज.)
पृष्ठ सज्जा : देवेन्द्र कम्प्यूटर, दिल्ली आवरण : कलाप्रेमी

Scanned by CamScanner